जिद्दी बूढ़ी औरत

क्लाइड रॉबर्ट बुल्ला, चित्र: ऐनी रॉकवेल

एक बार एक बूढ़ी औरत थी जो बेहद ज़िद्दी थी और हमेशा अपनी ही बात पर अड़ी रहती थी. "मैं करूंगी!" या "मैं नहीं करूँगी!" वो कहती. और जब वो अपना मन बना लेती तो कोई भी उसके मत को कभी बदल नहीं सकता था.

लोग उससे कहते थे, "शायद तुम दुनिया की सबसे ज़िद्दी महिला होगी."

फिर वो अपना सिर हिलाती और कहती, "वो सच हो सकता है."

ऐसा लगता था जैसे कि उसे इस बात पर गर्व हो.

वो एक ऊँची, खड़ी पहाड़ी के किनारे पर रहती थी. वहां उसका एक छोटा सा खेत था, जिसमें उसका छोटा सा घर और बगीचा था.

लेकिन उसका छोटा खेत धीरे-धीरे उखड़ रहा था. हर दिन पहाड़ी के किनारे पर स्थित खेत का एक हिस्सा टूटकर नदी में नीचे गिर जाता था.

बूढ़ी औरत के पड़ोसी थे—एक किसान, एक चरवाहा और एक चक्की का मालिक. वे उससे एक-एक करके मिलने आए. और फिर वे सब एक-साथ मिलने आए.

"हमें आपसे बात करनी है," किसान ने कहा.

"उसी पुरानी बात के बारे में, निस्संदेह," बूढ़ी औरत ने कहा.

"हाँ," चरवाहे ने कहा.

"फिर मैं नहीं सुनूंगी," बूढ़ी औरत ने कहा.

"आपको हमारी बात अवश्य सुननी चाहिए," चक्की के मालिक ने कहा. "आप यहाँ पर और अधिक दिन नहीं रह सकती हैं."

"मेरे पास यहाँ पर सब कुछ है," बूढ़ी औरत ने कहा. "यदि नदी मेरे घर और बगीचे को निगल जाती है, तो उसे मुझे भी निगल जाने दो."

पड़ोसियों ने कराहते हुए सिर हिलाया.
वे एक-दूसरे से यह कहते हुए वापिस गए.
"वास्तव में वो दुनिया की सबसे जिद्दी
महिला है!"

कुछ दिनों बाद एक छोटी लड़की बुढ़िया के घर आई.

"मैं नदी के उस पार से आई हूँ," उसने कहा, "वहां मैं अपने भाइयों और बहनों के साथ रहती हूँ. हम कुल मिलकर नौ हैं, और हम अनाथ हैं."

"तुम यह कहानी मुझे क्यों सुना रही हो?" बूढ़ी औरत ने पूछा.

"हमें अपनी देखभाल के लिए किसी अच्छे इंसान की ज़रूरत है," छोटी लड़की ने कहा. "ऐसा इंसान जो हमारे लिए गीत गाए और हमें कहानियां सुनाए और शायद कभी-कभी हमारे जन्मदिन पर केक भी बेक करे. क्या आप मेरे साथ मेरे घर चलेंगी?"

"क्या मेरे पड़ोसियों ने ही तुम्हें यहाँ भेजा है?" बूढ़ी औरत ने पूछा.

छोटी लड़की ने उस बात से इनकार नहीं किया. "हम एक बड़े घर में रहते हैं," उसने कहा. "वहां आपके लिए अपना एक अलग कमरा होगा."

"अच्छा अब जाओ," बुढ़िया ने कहा, और फिर उसने दरवाजा बंद करने की कोशिश की.

लेकिन छोटी बच्ची का दरवाजे में अपना पैर अड़ा दिया. "मेरा घर यहाँ से एक दिन की दूरी पर है, और सूरज जल्द ही अस्त हो जाएगा. कृपया मुझे रात को यहाँ पर ही रहने दें."

"ठीक है," बूढ़ी औरत ने कहा.

अगले दिन छोटी लड़की अपने घर की तब तक तारीफ करती रही जब तक बूढ़ी औरत ने उसे जाने के लिए नहीं कहा.

"आधा दिन बीत गया है," छोटी लड़की ने कहा, "मैं अंधेरा होने से पहले अपने घर नहीं पहुंच पाऊंगी."

"पर इसके लिए दोषी कौन है?" बूढ़ी औरत ने कहा. "ठीक है एक रात और रुक जाओ, लेकिन उससे और ज़्यादा नहीं."

"धन्यवाद," छोटी लड़की ने कहा, "और जब मैं यहां हूं, तो मैं आपको अपने घर के बारे में और जानकारी दे दूं. हमारे पास सूअर और मुर्गियां और एक गाय है. हमारे पास दो अंगूर की बेलें और एक नाशपाती का पेड़ है. वहां बहुत अच्छा है, और जब आप अपना घर छोड़ेंगी तो वहां आपके रहने के लिए एक अच्छा स्थान होगा."

"मैं इस घर को कभी नहीं छोड़ूंगी," बूढ़ी औरत ने कहा, "और तुम जितनी जल्दी इस बात को समझोगी उतना ही तुम्हारे लिए अच्छा होगा."

अगले दिन सुबह-सुबह बूढ़ी औरत ने छोटी बच्ची को जगाया और उसे दरवाजे से बाहर निकाल दिया.

पर छोटी बच्ची पिछले दरवाजे से अंदर घुस आई. "आप भी समझ लें," उसने कहा, "मैं तब तक नहीं जाऊँगी जब तक आप मेरे साथ नहीं चलेंगी."

"मुझे लगता है कि तुम जाओगी," बूढ़ी औरत ने कहा.

"नहीं" छोटी लड़की ने कहा.

"मुझे सच में लगता है कि तुम जाओगी," बूढ़ी औरत ने कहा, और फिर उसने बहुत धीरे से गाया:

"अगर तुम मेरी छत के नीचे सोती हो,

तो तुम्हें अपने रख-रखाव के लिए कुछ काम करना चाहिए."

फिर बूढ़ी औरत ने छोटी बच्ची को एक के बाद एक काम करने को दिए. "घर में झाड़ू लगाओ," उसने कहा. "खिड़कियाँ धो... फर्श साफ करो . . . कपड़े धो."

छोटी लड़की ने वो सब कुछ किया जो उसे बताया गया. हर रात छोटी लड़की कहती थी, "देखिए वक़्त बहुत कम है. क्या आप अब मेरे साथ चलेंगी?"

"तुम मेरा जवाब जानती ही हो," बूढ़ी औरत कहती.

और इस तरह ग्यारह दिन बीत गए.

बारहवें दिन की सुबह छोटी लड़की ने कहा, "अब समय नहीं बचा है. सारी रात मैंने पहाड़ के पास की ज़मीन को नदी में गिरते हुए सुना है."

"तो तुम जाओ," बूढ़ी औरत ने कहा.

"क्या आप मेरे साथ चलने को तैयार हैं?"

"तुम मेरा जवाब जानती ही हो," बूढ़ी औरत ने कहा, और उसने फिर से गाया:

"अगर तुम मेरी छत के नीचे सोती हो,

तो तुम्हें अपने रख-रखाव के लिए कुछ काम करना चाहिए."

"मैं क्या करूँ?" छोटी लड़की ने पूछा.

बुढ़िया को घर में करवाने के लिए और कोई काम नहीं मिला. "अच्छा, बगीचे में जाकर खरपतवार बीनो," बुढ़िया ने कहा.

फिर छोटी बच्ची बाहर चली गई.

एक घंटा बीता, और फिर दूसरा. छोटी लड़की घर वापिस नहीं आई. बुढ़िया ने बाहर देखा. केवल आधा बगीचा ही बचा था. जब उसने देखा, तो आधा उखड़कर नीचे नदी में गिर गया था.

पर छोटी बच्ची कहीं नहीं थी.

"तुम कहाँ हो?" बुढ़िया ने तेज़ आवाज़ में पूछा.

लेकिन कोई जवाब नहीं आया.

"छोटी लड़की - छोटी लड़की!" बुढ़िया चिल्लाई.

फिर भी कोई जवाब नहीं आया.

बूढ़ी औरत दौड़कर किसान के घर गई. "छोटी लड़की चली गई है!" वो रोई.

"कहां?" किसान से पूछा.

"मैंने उसे बगीचे में खरपत बीनने के लिए भेजा था," बूढ़ी औरत ने कहा. "अब बगीचा नदी में गिर गया है, और उसके साथ छोटी लड़की भी. अब मैं क्या करूँ?"

"दुःख महसूस करने के अलावा अब आप भला और क्या कर सकती हैं?" किसान ने कहा.

फिर बूढ़ी औरत भागकर चरवाहे के घर गई. "मेरा बगीचा गिर गया है, और उसके साथ छोटी लड़की भी. काश मैंने उसे वहाँ न भेजा होता! अब मैं क्या करूँ?"

"अपनी गलती को मानो," चरवाहे ने कहा.

फिर बूढ़ी औरत चक्की के मालिक के पास दौड़ी. "मेरा बगीचा गिर गया है, और उसके साथ छोटी लड़की भी. मैंने ही उसे वहाँ भेजा था इसलिए मैं ही दोषी हूँ. ओह, अब मैं क्या करूँ?"

"क्या करो? रोओ और अपने बाल नोचो?" चक्की के मालिक ने कहा.

"ठीक है मैं रोऊंगी और अपने बाल नाचूंगी," बूढ़ी औरत ने कहा. "मुझे अपने बाकी दिनों में इस बात का बेहद दुःख होगा, और मैं पूरी दुनिया को बताऊंगी कि मैं कितनी दुष्ट बूढ़ी औरत हूं!"

फिर वो रोती और अपने बाल नोचती हुई सड़क पर दौड़ी.

जैसे ही रात हुई, वो आराम करने के लिए एक पत्थर पर बैठ गई. तभी उसकी बगल में कोई आया. एक आवाज ने कहा, "बूढ़ी औरत, मैं तुम्हारे लिए एक बुरी और एक अच्छी खबर लाई हूं."

"यहाँ से जल्दी चली जाओ," बुढ़िया ने कहा, "क्योंकि दुनिया मे मुझ से बुरा और कोई नहीं है. कभी यहाँ एक छोटी लड़की थी, लेकिन अब वो मेरी वजह से चली गई है."

"सुनो," उस आवाज ने कहा, "देखो, तुम्हारा घर नदी में गिर गया है. यह बड़ी बुरी खबर है. लेकिन अच्छी बात यह है तब घर में कोई था नहीं."

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," बूढ़ी औरत ने कहा. "मेरा बगीचा भी नदी में गिर गया है और उसके साथ छोटी लड़की भी, और वो सब गलती मेरी ही है. वो इतनी अच्छी लड़की थी - वो अपने घर के बारे में मुझे बढ़िया कहानियां सुनाती थी. वो बहुत जिद्दी थी लेकिन वो दुनिया की सबसे अच्छी छोटी लड़की थी." फिर बुढ़िया जोर से रोई. "नहीं, मैं ही ज़िद्दी थी. मैंने कभी किसी की बात नहीं सुनी, लेकिन अब वो छोटी लड़की सदा के लिए चली गई है!"

"रोना बंद करो," आवाज ने कहा. "अपनी आँखें खोलो और मुझे देखो."

जब बुढ़िया ने अपने बालों को पीछे धकेला तो उसने अपने सामने उस छोटी लड़की को खड़ा पाया.

"हे भगवान!" बूढ़ी औरत कीचड़ में गिर गई.

“देखो, अब छोटी लड़की का भूत मुझे सता रहा है!"

"उठो," छोटी लड़की ने कहा. "मैं भूत नहीं हूँ."

"तुम भूत नहीं हो?" फिर बुढ़िया उठकर बैठी और उसकी ओर देखने लगी. "फिर तुम यहाँ कैसे आईं?"

"आपने मुझे बगीचे में भेजा था," छोटी लड़की ने कहा, "लेकिन बगीचा गिर रहा था, इसलिए मैं वहां नहीं गई. उसकी बजाए, मैं सड़क के पार झाड़ियों में छिप गई."

"तुमने अच्छा किया?"

"हाँ, मुझे लगा कि आप मुझे वहां पर ढूँढ़ने आएंगी."

"क्या तुमने मुझे चिल्लाते हुए नहीं सुना?"

"हाँ सुना," छोटी लड़की ने कहा.

"लेकिन फिर तुमने कोई जवाब क्यों नहीं दिया."

"नहीं दिया," छोटी लड़की ने कहा.

"तुम बड़ी दुष्ट हो," बूढ़ी औरत ने कहा.

"लेकिन आप मुझे ढूँढ़ते हुए बाहर आईं," छोटी लड़की ने कहा, "पर इस तरह मैंने आपको घर से बाहर तो निकाला."

अब बुढ़िया हँस रही थी और रो भी रही थी.

"तुम कितनी बुद्धिमान छोटी लड़की हो! मुझसे कहीं ज्यादा समझदार. लेकिन मैं जल्द ही ठीक हो जाऊंगी. फिर मैं दूसरा घर बनाऊंगी, और वहां पर तुम मेरे साथ रहोगी."

"हम नए घर की प्रतीक्षा करेंगे," छोटी लड़की ने कहा, "तब तक आप मेरे साथ मेरे घर में रहने क्यों नहीं चलतीं? शायद आपको वहाँ बहुत अच्छा लगे."

फिर वे सारी रात चले और सूर्योदय तक छोटी लड़की के घर पर पहुंचे. छोटी लड़की के सभी भाई-बहन उनसे मिलने के लिए दौड़े हुए आए.

बुढ़िया को वहां बहुत अच्छा लगा. वो अनाथों की देखभाल करने के लिए वहीँ बस गई. उसने बच्चों के लिए गीत गाए और उन्हें कहानियाँ सुनायीं और उनके जन्मदिन पर केक बनाए. फिर बुढ़िया शायद उतनी ज़िद्दी नहीं रही.

समाप्त